धर्मकाय हुसैन अ०

लेखकः श्री पंडित चंद्रिका प्रसाद 'जिज्ञासु'
(भारतीय समाज तत्व दर्शी)

लेखक श्री चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु ने चक्रधरपुर जिला सिंहभूमि (बिहार) में 'हुसैन डे' के अवसर पर सन् 1385हि० में 'धर्मकाय हुसैन' के विषय पर जो भाषण दिया था, जिसे इमाममिया मिशन लखनऊ ने प्रकाशित किया था उसी को पुनः 'शुआए अमल के पाठकों के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। -इदारा

जयन्ति ते महावीरः
अरहन्ता पारदर्शनः।
नास्ति येषां यशः काये
जरामरणजुं भयम्।।

अर्थ- जो अरहन्त हैं, जिन्होंने दुनियां में फंसाने वाले सारे बन्धनों को काट डाला है और जिन्होंने दुनिया के उस पार (उक़बा) को देख लिया है, उन महावीरों की जय हो, क्योंकि उनकी यश रूपी काया को बुढ़ापे और मौत का ख़तरा नहीं है। उनका यश शरीर अमर है।

माननीय सभापति महोदय और श्रोताओं! मैं आपके आगे हज़रत इमाम हुसैन के पवित्र गुणों और चरित्रों का अपने टूटे-फूटे शब्दों में वर्णन करके अपनी वाणी को कुछ क्षणों के लिए पवित्र करना चाहता हूँ और अपनी श्रद्धा के दो फूल उनकी बारगाह में चढाना चाहता हूँ।

मुहम्मद गुलअस्तो अली बू-ए-गुल
बुवद फ़ातिमा अन्दरीं बर्गे-गुल
चु इतरश बरामद हुसैनो-हसन
मुअत्तर शुद अज़ वै ज़मीनो ज़मन

इस कलाम में शायर ने किसी बेहतरीन फूल गुलाब या कमल के रूपक में 'पंजतन पाक' अर्थात पाँच पवित्र-शरीरी या दिव्यकाय पुरुषों का वर्णन किया है। शायर ने हज़रत मुहम्मद साहब के पवित्र शरीर की उपमा एक फूल से दी है, दिव्य-देह हज़रत अली को उस फूल की ख़ुशबू और हज़रत फ़ातिमा ज़हरा को उस फूल की पंखड़ियाँ तथा इमाम हसन व इमाम हुसैन को उस फूल का इत्र तसव्वुर किया गया है जिसकी ख़ुशबू ने ज़मीन और आसमान, देश और काल को मोअत्तर अथवा सुगंन्धित कर दिया है।

इस कलाम में शायर ने 'पंजतन पाक' के पवित्र शरीरों की जो उपमा दी है, उसमें सहृदयता है, श्रद्धा है, प्रेम है और सत्य को प्रकट करने का एक सुन्दर और प्रिय प्रयास है।

पवित्र देह, पवित्र दृष्टि, पवित्र विचार, पवित्र आचरण और पवित्र परिधान तथा पवित्र गंध पर हिन्दू और बौद्ध दोनों धर्मों में काफ़ी चर्चा है। उसी बौद्ध और हिन्दू नज़रिये की रौशनी में 'पंजतन पाक' को, जैसा मैने समझा है, आप हज़रात के रू-ब-रू पेश करने की इजाज़त चाहता हूँ और चाहता हूँ कि आप उसे ग़ौर से सुनें भीं।

माद्दी जिस्म मलों का मख़ज़न

हिन्दी और बौद्ध दोनों धर्मों में शरीर को 'पाँच भौतिक' कहा गया है : पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश (मिट्टी, पानी, आग, हवा और ख़ला) इन पाँचों को पंचमहाभूत कहते हैं, और इन्हीं पाँच बुनियादी अनासिर से हमारे आपके जिस्म बने हैं। बौद्धों के यहाँ इस काया को 32 मलों का आकार बताकर 'कायानुस्मृति' की भावना करते रहने का आदेश है।

कायानुस्मृति भावना का मक़सद यह है कि इस जिस्मेफ़ानी की अन्दरूनी गंदगियों का तख़ैयुल करते रहना चाहिए ताकि इसके साथ मोह कम होता रहे और जो लाफ़ानी, निर्विकार, पवित्र, श्रेष्ठ और सर्वोपरिय है,

उसकी तरफ़ प्रेम बढ़ता रहे। यहाँ तक कि यदि आवश्यक हो तो इस नापाक और फ़ानी जिस्म को उस पाक और लाफ़ानी पर कुर्बान किया जा सके और उस बलिदान मे कोइ हिचक न हो।

यह भावना यूँ की जाती है कि मेरा यह माद्दी जिस्म, जिसके अन्दर एक सूक्ष्म शरीर (जिस्म लतीफ़) भी है, बत्तीस गंदगियों का आकार है जो त्वचा (जिल्द या खाल) से मंढा हुआ है। इसके अन्दर बाल, रोयें, नाख़ून, दाँत, हड्डी, मज्जा, बृक्क, माँस, नसें, हृदय, फुप्फुस, यकृत, क्लोमक, पिहक, आँतें, पसली, उदरमल, पित्त, श्लेष्म, रुधिर, पीप, पसीना, पेशाब, पाखाना, लसिका, आँसू, थूक, सीढ, चर्बी, मत्तलृंग इत्यादि बत्तीस गंदगियाँ हैं जो बदबूदार, बदनुमा, जुगुप्सा और घृणा पैदा करने वाली हैं, सिर्फ़ इसकी ऊपरी जिल्द लुभावनी नज़र आती है। इस नापाक जिस्म के लिए क्या गुरूर और क्या मोह। ऐसी भावना करने से चित्त काया से उपराम होकर जो परम तत्व, ध्येय या माहसल है, उसमें आसानी से लग जाता है।

हुस्न परस्त ब्राह्मण शिष्य

बौद्ध शास्त्रों में एक लतीफ़ा है। गौतम बुद्ध के ज़माने में एक ब्राह्मण बुद्ध के निहायत ख़ूबसूरत जिस्म पर आशिक़ होकर उनका चेला बन गया। चेला बन जाने पर बुद्ध ने उसे अभ्यास के लिए जो कमस्थान बताया, उस पर अमल करने के बजाये वह हर वक़्त उनके नज़दीक रहकर उनके सुन्दर रूप को निहारा करता था। वह जितनी देर बुद्ध को नहीं देखता, उतने क्षण व्याकुल रहता। उसकी यह हालत देखकर एक दिन बुद्ध ने उससे कहा- "तुम मेरे इस 32 मलों के आकार जिस्म को क्या देखा करते हो? इससे तुम्हें क्या मोह है? मेरे इस शरीर को हर समय देखते रहने से तुम्हें कोई लाभ न होगा, मैने तुम्हें जो उपदेश दिया है और जो साध ान बताया है, उस पर अभ्यास करने से ही लाभ होगा। जाओ अमुक वन में और वहाँ जो पहाड़ है, उसकी कन्दरा में अकेले रहकर मेरे बताये 'कम्मट्ठान' की साधना करो।"

कहते हैं, बुद्ध ने उस ब्राह्मण-शिष्य को श्रद्धालु समझ उस पर दया करके ब्रह्म-बिहार-भावना का उपदेश दिया था। इस भावना के चार अंग हैं- करुणा, मैत्री और उपेक्षा। इनकी विधिवत् भावना करने से साधक ब्रह्म से वासिल होकर ब्रह्म में विहार करने लगता है। अस्तु।

'पाक-तन' कैसे होता है?

हज़रात! इस कहानी को पेश करने से मेरा मतलब यह है कि भगवान् बुद्ध के इस कथन के अनुसार दुनिया के सभी जिस्म गंदगियों से भरे हुए हैं, चाहे वे किसी के भी हों, तब प्रश्न होता है, फिर किसी शरीरधारी को 'पाक-तन' कैसे कहा जा सकताहै? कौन ऐसी चीज़ है जिसके होने से मनुष्य पाक तन हो जाता है?

इस सवाल का भी जवाब खुद बुद्ध ने दूसरी जगह अपने को 'धर्म-काय' कहकर दे दिया है। 'धर्म-काय' का मतलब है, पाप-हीन शरीर या मासूमियत, जिसमें कोई पाप या गुनाह न हो। वह व्यक्ति जो इस नापाक और गंदगी से भरे जिस्म में रहता हुआ भी धर्म की काया मे विहार करता है, जिसने दीन और ईमान को ही अपना जिस्म बना लिया है, जो इन्तिहाई जुल्मों और कष्टों को सहता हुआ इस माद्दी जिस्म को फ़ना और कुर्बान हो जाने देता है और इस जिस्म से ताल्लुक़ रखने वाली तमाम प्रियतम् व अज़ीज़ तरीन चीज़ों को मिट व छुट जाने देता है, मगर अपने दीन व ईमान के जिस्म में दाग़ व धब्बा नहीं लगने देता, ऐसे महामानवा को 'धर्म-काय' या 'पाक-तन' कहा जाता है।

हज़रत इमाम हुसैन धर्मकाय थे

हज़रत इमाम हुसैन उन्हीं पवित्रतम् महापुरुषों में एक बेमिसाल हस्ती थे। आपने पापी यज़ीद के द्वारा किये जाने वाले इन्तिहाई और नाक़ाबिले बर्दाश्त जुल्मों को सह लिया, अपना सब कुछ खो दिया, जान से ज़्यादा प्यारे बच्चे का नन्हा सा सिर अपनी प्यार भरी गोद में लिये हुए कटवा दिया, खुद उस मासूम के ख़ून से तर हो गये, मगर आपने अपनी 'धर्मकाया' पर धब्बा लगने नहीं दिया। क्योंकि वह 'पाकतन' थे। नौ सौ ज़ख़्मों से छलनी हुआ उनका जिस्म जब जंगे कर्बला में घोड़े से

गिर गया, तब भी वह बेहोश नहीं हुए और न ग़ाफ़िल। उन्हें अपने धर्म की चेतना बाक़ी रही। अपनी ज़िन्दगी के अंतिम क्षणों में भी उन्होंने ब्रह्म सायुज्य और ब्रह्म-विहार किया, प्रेम से सजदा करते हुए वह अपने माबूद से वासिल हुए (जा मिले)। आपने अपनी अडिग और सुदृढ़ निष्ठा से दुनिया को दिखा दिया कि 'धर्मकाय' या 'पाकतन' महापुरुष ऐसे हुआ करते हैं।

इस दृश्य का किसी कवि ने अत्यन्त करुण और हृदय हिला देने वाला वर्णन किया है। कवि कहता है:-

क्या आशिक़े ख़ुदा था वह आलम का ताज था
यह बंदगी, यह इज्ज़, यह ताअत़, यह यादगार
पुरख़ूँ वह हाथ टेक के मौला ने एक बार
ज़ख्मी जबीं को ख़ाक पे रखा ब इन्किसार

लाये ख़ुदा का ज़िक्र वह सूखी ज़बान पर।
रोये बशर ज़मीं पे, मलक आसमान पर।।

पंज-तन पाक अर्थात पाँच धर्मकाय

सिर्फ़ हुसैन ही नहीं, उनके भाई हज़रत इमाम हसन, उनके पिता, हज़रत अली, उनकी माता हज़रत फ़ातिमा ज़हरा तथा उनके नानाजी हज़रत मोहम्मद साहब जिनके पवित्र हृदय में क़ुरान का प्रकाश हुआ और जो 'अरब के रसूल' के नाम से संसार मे पूजित हुए, ये पाँचो 'पाकतन' या 'धर्मकाय' थे। इन्होंने अपनी धर्म की काया को समुज्जवल रखा। उसमें कहीं दाग़-धब्बा नहीं लगने दिया। अपना भौतिक शरीर, उसके प्रिय संबधों तथा अपना सर्वस्व अपनी 'धर्मकाया' के लिए क़ुर्बान कर दिया!

हज़रत अली किस तरह ईश्वर-प्रणिधान करते थे, एक उदाहरण से उनकी तल्लीनता की झलक मिलेगी। कहते हैं, हज़रत अली के पैर की एड़ी में तीर की गाँसी गड़ गई थी। उसे कैसे निकाला जाय, उसके निकालने में तो अत्यन्त पीड़ा होगी। किसी ने कहा एक उपाय मेरी समझ में आता है। वह यह कि जिस समय हज़रत अली इबादत मे हों और सजदा करके ईश्वर प्रणिधान कर रहे हों, उसी समय इसे निकाल लिया जाये, तो उन्हें मालूम भी न होगा। और ऐसा ही किया गया। प्रश्न होता है क्या उस समय उन्हें शारीरिक पीड़ा न हुई होगी? अवश्य हुई होगी और शायद उससे भी ज़्यादा हुई होगी जितनी कि ज़ाहरी तरीक़े से गाँसी निकालने मे होती है। परन्तु उस आत्यांतिकी पीड़ा की अनुभूति भी उन्हें नहीं हुई। क्यों नहीं हुई? यह प्रश्न है, और इसका उत्तर यह है कि उस समय हज़रत अली अपने भौतिक शरीर के अन्तर्गत धर्म-शरीर में विहार कर रहे थे और अपनी उस ध र्म-काया को ईश्वर से युक्त किये हुए थे। ऐसी दशा में भौतिक शरीर की पीड़ा की अनुभूति कौन करता?

इसे कहते हैं धर्मकाय की इबादत। नहीं तो कवि वचन है:-

होती नहीं नमाज़ जो दिल से तेरी अदा।
ज़ाहिद, तेरी नमाज़ को मेरा सलाम है।।

ज़रा ग़ौर कीजिए-

कीड़ा ज़रा सा और वह पत्थर में घर करे।
इन्साँ वह क्या जो नै दिले दिलबर में घर करे

ज़रा हिम्मत कीजिए-

वह कौन सा उक़दा है, जो वा हो नहीं सकता।
हिम्मत करे इन्सान तो क्या हो नहीं सकता।।

यक़ीन कीजिए-

ख़ूँ रगे मजनू से निकला फ़स्द लैला की जो ली।
इश्क़ में तासीर है, पर जज़्बे कामिल चाहिए।।

यह 'कामिल जज़्बा' क्या है? भौतिक शरीर से ऊपर उठकर धर्म शरीर में निवास करना, यानी 'धर्मकाय' हो जाना।

धर्मकाय पुरुषों की दो और मिसालें

हज़रात! 'धर्मकाय' को अधिक स्पष्ट करने के लिए दो मिसाल और पेश करना चाहता हूँ। पहली मिसाल भगवान गौतम बुद्ध की है, दूसरी विदेह राजा जनक की।

गौतम बुद्ध को आज भी एक तिहाई दुनिया क्यो पूजती है? वह निष्पाप थे, पवित्र थे, पूर्ण ज्ञानी थे, और

पंहुचे हुए पुरुष थे। उन्होंने जिस्मानी और दुनियावी सारे बन्धन काट डाले थे। शाक्यों के विशाल गणतंत्र के अध्यक्ष महाराज शुद्धोदन के इकलौते प्राणों से प्यारे बेटे थे। दुनिया के तमाम ऐश आराम उन्हें प्राप्त थे। फिर भी अपनी 28 साल की उम्र में निहायत हसीन और वफ़ादार बीवी और खुशनुमा बच्चा सब त्यागकर सत्य की खोज में निकल पड़े और फ़क़ीरी अख़्तियार की।

एक अजीब बात है कि संयोग से उनकी पैदाईश साखू के जंगल मे हुई थी और उनका देहान्त भी साखू के जंगल में ही दो विशाल वृक्षों की बीच हुआ। फ़क़ीर हो जाने और बुद्धत्व लाभ करने पर बड़े-बड़े राजा, रईस, सेठ, साहूकार और बड़े-बड़े दार्शनिक विद्वान् उनके शिष्य हुए और लाखों करोड़ों की लागत के विहार बनवाकर उन्हें दान किये गये, लेकिन वह कभी ऊँचे पलंग पर नहीं सोये, हमेशा चौपेती (चार पर्त का कपड़ा) बिछाकर ज़मीन पर सोते रहे। उनके धर्म और दर्शन के प्रचार के लिए बड़ी-बड़ी युनिवर्सिटियाँ खुलीं, जिनमें हज़ारों की तादाद में ग़ैर मुल्कों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे और उस ज्ञान को ले जाकर अपने मुल्क में फैलाते थे।

एक दिन का ज़िक्र है, भगवान् बुद्ध एक जंगल में, रास्ते के किनारे, पशुओं के पैरों से खुरदरी ज़मीन पर, जंगल की सूखी पत्तियों पर चौपेती बिछाकर रात में सोये और रात के पिछले पहर में, नियम के अनुसार, उठकर सूर्य निकलने से पहले उसी चौपेती पर पद्मासन से बैठकर ध्यान समाधि में निरत हो गये।

संयोग से एक राजकुमार, जो शिकार खेलने में देर हो जाने के कारण रात में किसी गाँव मे सो गया था। भोर में उसी रास्ते से अपने घर जा रहा था। माह के जाड़े में एक तेजस्वी जोगी को इस तरह जंगल में बैठा देख राजकुमार पास आकर बैठ गया। थोड़ी देर में जोगी की आँखें खुलीं और राजकुमार पर नज़र पड़ते ही आँख के इशारे से उसने राजकुमार का हाल जानना चाहा। लेकिन राजकुमार खुद ही पूछ बैठा- "क्या जाड़े के मारे रात को नींद नहीं आई?"

"सुख से सोये, राजकुमार" - जोगी ने कहा।

"माघ की रात, ठंडी हवा के झोंके, खुला मैदान, ऊबड़ खाबड़ ज़मीन, थोड़ी सी सूखी पत्तियों पर कपड़ा बिछा है। मामूली सी चादर है, कैसे नींद पड़ी होगी? मगर आप कहते हैं सुख से सोये?"

"तथागत 'धर्मकाय' हैं।" जोगी ने कहा - "जो धर्मकाय होते हैं, वे शीत, दुख, मान, अपमान आदि भौतिक वेदनाओं से प्रभावित नहीं होते, क्योंकि वे राग द्वेष, काम क्रोध, लोभ-मोह आदि सांसारिक व्याधियों से विमुक्त होते हैं। जिनहोंने इच्छाओं को त्याग दिया है, जिन्हें किसी प्रकार के सांसारिक सुख की चाह नहीं है, जो धर्म में ही रत हैं, धर्म मे ही सम्पूर्ण रूप से विहार करते हैं, वे सदा सुख की नींद सोते हैं जो समस्त शीलों से समन्वित, सर्वत्र और सर्वदा समाधिनिष्ठ एवं प्रज्ञावान् हैं, वे सदा सुख की नींद सोते हैं, जिनकी तृष्णा का क्षय हो गया है, जिन्हें किसी वस्तु की चाह नहीं है, निर्वाण-लाभ ही जिनका अवशेष है, वे जीवन-मुक्त पुरुष सदा सुख से सोते हैं।"

बुद्ध के पवित्र वचनों से प्रभावित और अनुरक्त हो राजकुमार उनके शरणापन्न हो गया।

दूसरा उदाहरण मिथिला के विदेह राजा जनक का है।

राजा जनक आत्मादी थे। उनका सिद्धाँत था, वह आत्मा हैं, देह में निवास करते हुए भी देह से जुदा हैं जैसे घर में रहनेवाला मनुष्य घर नहीं होता, बल्कि घर से भिन्न होता है उसी तरह इस देह में रहने वाली आत्मा भी देह नहीं है, देह से अलग पाक, शुद्ध, ज्ञानस्वरूप और नितय है। देह मर जाती है, आत्मा नहीं मरती। आत्मा अमर है।

किसी ने कहा- "महाराज, अगर आप देह से अलग हैं, तो आपको देह-संबधी वेदनाओं से भी प्रभावित न होना चाहिए।"

"हाँ, मैं देह में रहते हुए 'विदेह' हूँ। सर्दी-गर्मी, दुख-सुख, मान-अपमान, राग-द्वेष आदि देह सम्बन्धी वेदनाओं का मैं अध्याय नहीं करता।"

लिखा है, राजा जनक एक पैर राजगद्दी पर और

दूसरा आग पर रख लेते थे जलने की वेदना का एहसास नहीं करते थे, क्योंकि वह विदेह थे, आत्मा थे, देह से अलग।

बुद्ध की धर्म-काया और विदेह जनक का आत्मावाद, दोनों इस बात की दलील हैं कि हमारी इस भौतिक काया के भीतर एक जज़बाती काया है, अगर उसे गुनाहों से पाक करके जिस्म से अलग कर लिया जाये तो दैहिक वेदनाओं का उस पर कोई असर नहीं होगा, और उस पाप विहीन काया में विहार करनेवाला पुरुष 'धर्मकाय पुरुष' ही 'पाक-तन' कहलाता है। ऐसे धर्मकाय महापुरुष काया पर होने वाले ज़ुल्मों, कष्टों और दुःखों से प्रभावित नहीं होते। वे जिस धर्मकाया में निवास करते हैं, उसे आग जला नहीं सकती, हवा सुखा नहीं सकती, पानी भिगो नहीं सकता, और तलवार उसे काट नहीं सकती। वह धर्म की काया न कभी बूढ़ी होती है और न कभी मरती है। बीमारी, बुढ़ापा और मौत तीनों से वह बरी है।

धर्मकाय हुसैन की परीक्षा

हज़रत इमाम हुसैन चूंकि पाकतन और धर्मकाय थे, इसलिए वे उन तमाम ज़ुल्मो और कष्टों से विचलित नहीं हुए जो पापी और मूर्ख यज़ीद के द्वारा उन्हें पंहुचाये गये। यज़ीद ने उनके भौतिक शरीर को प्यास से तड़पाया, तीरों और भालों से छलनी किया, उनकी प्यारी बेटी सकीना को पानी के लिए तरसाया, उनके मासूम बच्चे अली असग़र को दो बूँद पानी के लिए हत्या कराई, उनके साथियों को शहीद किया। जितने भी ज़ुल्म कर सकता था सब किये, लेकिन? लेकिन क्या यज़ीद हुसैन के पवित्र धर्म शरीर को भी छू सका? हरगिज़ नहीं। बल्कि उस मूर्ख ने उनके भौतिक शरीर को क़त्ल कराके खुद अपना विनाश कर लिया।

धर्मकार्य हुसैन के भौतिक शरीर पर किये गये अमानुषी अत्याचारों अपमानों को सुनकर दुनिया रो पड़ी। जहाँ जहाँ यह ख़बर पहुँची, वहाँ हाहाकार मच गया। लोग छाती कूटने लगे, दाँत पीसने लगे, आँसू बहाने लगे तथा पापी और अत्याचारी यज़ीद को कोसने लगे। हर तरफ आह, कराह और गिरियाज़ारी होने लगी, शायरों के दिल पिघल गये और दर्द-भरे कलाम निकलने लगे। किसी शायर ने कर्बला के मैदान में लावारिस पड़ी हुई हुसैन की लाश को देखकर अपना दुख यों उँडेला-

मलबूसे बदन ले गये सब, लूटने वाले,
सीने से मगर तीर किसी ने न निकाले,
पहलू-ए-मुबारक में गड़े रह गये भाले,
क्यों चर्ख़ ये हाल उसका जिसे फ़ातिमा पाले,
शब्बीर का सिर नेज़ा-ए-ख़ूली की अनी पर।
तुफ़ दहर पे और ख़ाक है दुनियाये दनी पर।।

शाह और बादशाह हुसैन

साधारण लोग रोये, कराहे, आँसू बहाये और छातियाँ कूटीं, यह स्वाभाविक था। मगर जो आँख वाले ज्ञानी पुरुष थे, वह रोये नहीं, बिलखे नहीं, बल्कि कर्बला की दुर्घटना को अपनी विवेक की आँखों से देखकर गर्व से बोल उठे-

शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन,
दीन अस्त हुसैन, दीं-पनाह अस्त हुसैन,
सर दाद, न दाद दस्त दर दस्ते-यज़ीद,
हक़्क़ा कि बिना-ए-ला इलाह-अस्त हुसैन!!

उन्होंने हुसैन को शाह और बादशाह समझा, मुजस्सिम दीन और दीन-पनाह समझा, और सर झुकाकर क़बूल कर लिया कि ऐ पवित्र हुसैन! तू उस महावाक्य "ला इलाहा इल्लल्लाह" का कारण है, तेरी बदौलत आज दुनिया में इस महावाक्य का डंका बज रहा है। हुसैन! तूने दुनिया को ख़्वाबे-ग़फ़लत से जगा दिया, तूने दुनिया को जीना सिखा दिया-

जहाँ को ख़्वाबे-फ़ना से जगा दिया तूने।
वफ़ा के वास्ते मरना सिखा दिया तूने।।

हुसैन! तू वीरों में महावीर है। तू साहसियों में महासाहसी हैं। तू विश्वासियों में महाविश्वासी है। तेरी प्रतिज्ञा अटल है। तेरा धैर्य हिमालय के समान अचल है। तेरी वीरता, तेरे साहस, तेरे विश्वास और तेरी अटल प्रतिज्ञा पर किसी शायर का यह कलाम ठीक बैठता है-

कुतुब अगर-चे जगह से टले तो टल जाये,
हिमाला बाद की ठोकर से भी फिसल जाये,
अगर चे बहर भी जुगनू की दुम से जल जाये,
और आफ़ताब भी क़बले उरूज ढल जाये,
मगर न साहबे अज़मत का हौसला टूटे।
कभी न भूल से उसकी जबीं पे बल आये।।

हुसैन के धर्मास्त्र और उनका धर्मरथ

सज्जनों! आईए, हम लोग अपनी विवेक-दृष्टि से ज़रा धर्मकाय हुसैन के उस धर्मरथ को भी देखें जिस पर सवार होकर वह कर्बला के मैदान में यज़ीद की ख़ूँख़ार फ़ौज से लड़े और उनके धर्म के उन अस्त्र-शस्त्रों को भी देखें जिनसे महासंग्राम करके वह विजयी, नहीं-नहीं, महाविजयी हुए। हमारी माद्दी आँखों ने हुसैन का माद्दी घोड़ा और लोहे की तलवार ही देखी, लेकिन धर्म और हक़ीक़त की आँख ने क्या देखा? उसे भी प्रेम से सुनिए। मैंने अभी तक इमाम हुसैन की धर्मकाया का ज़िक्र किया है। अब मैं हुसैन के धर्मास्त्रों और धर्मरथ की भी व्याख्या करने की इजाज़त चाहता हूँ।

हिन्दुओं के वेदान्त शास्त्र में इसे 'कोह विवेक शास्त्र' कहा गया है, और इसकी मंनोरंजक तस्वीर संस्कृत के 'विवेक चन्द्रोदय नाटक' में खींची गई है। इसी का दूसरा सीन गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी रामायण या रामचरित्र मानस में राम रावण युद्ध के समय दिखाया है। यह कथा रामायण के लंका काण्ड की है, जब कि रावण के साथ राम का युद्ध होने जा रहा था।

हुर और विभीषण

एक अजीब माजरा है। जंगे कर्बला में जिस तरह यज़ीद का साथी 'हुर' यज़ीदी फ़ौज को त्यागकर हुसैन मज़लूम की शरण में आ गया था और दरिया दिल हुसैन ने उसकी सारी ख़ताऐं माफ़ करके उसे हृदय से लगा लिया था, ठीक उसी तरह लंका के युद्ध में रावण का भाई विभीषण रावण को त्याग कर राम की शरण में आया और राम ने दुश्मन के भाई को प्यार से छाती से लगा लिया था उसी विभीषण की बात मैं अर्ज़ करूँगा।

राम का धर्मरथ और धर्मास्त्र

लंका में जब पूरी तैयारी करके रावण ख़ुद राम से लड़ने आया, तो वह एक बहुत मजबूत रथ पर सवार था, जो हर तरह के घातक शस्त्रों से सजा था, लेकिन राम के हाथ में धनुष और पीठ पर तीरों का तरकस था और पैदल थे। यह देखकर विभीषण बेसबर और व्याकुल होगया। बोला-

रावण रथी, विरथ, रघुवीरा,
देखि विभीषण भयउ अधीरा। 1
अधिक प्रीति मन भा सन्देहा,
बंदि चरण कह सहित सनेहा। 2
नाथ! न रथ, नहिं तनु पदत्राणा,
केहि विधि जीतब रिपु बलवाना। 3
सुनह सखा! कह कृपानिधाना,
जेहि जय होई, से स्यंदन आना। 4
सौरज-धीरज जेह रथ चाका,
सत्य-शील दृढ़ ध्वजा पताका। 5
बल-विवेक दम परहित घोरे,
क्षमा-दया समता रजु जोरे। 6
ईस-भजन सारथी सुजाना,
विरति चर्म, संतोष कृपाना। 7
दान परसु, बुधि सक्ति प्रचंडा,
वर विज्ञान कठिन कोबंडा। 8
अमल अचल मन त्रोन-समाना,
संयम-नियम सिलीमुख नाना। 9
कवच अभेद विप्र-पद-पूजा,
एहि सम विजय उपाय न दूजा। 10
सखा! धर्म मय अस रथ जाके,
जीतन कहें न कतहूँ रिपु ताके। 11
महा अजय संसार रिपु,
जीति सकई सो वीर।
जाके अस रथ होई दृढ़,
सुनहु सखा मतिधीर।। 12

इन चौपाईयों का उर्दू तर्जुमा यह है-

रावण को रथ पर सवार और राम को बगैर रथ देखकर विभीषण बेसब्र और परेशा हो गया। (1)

उसके दिल में राम की बड़ी मुहब्बत थी इसलिए उसका दिल शको शुबहा से पुर हो गया और राम की कदमबोसी करके पुर अज़ मुहब्बत बोला। (2)

ऐ मेरे आक़ा! आपके पास न रथ है, न पैरों में जूते। इस निहायत ताक़तवर दुश्मन को किस तरह जीतेंगे? (3)

यह सुनकर रहम के मसकन राम बोले- ऐ मेरे दोस्त! सुनो और जिससे हक़ीक़ी जीत होती है, वह रथ मेरे लिए लाओ। (4)

जिस रथ के शुजाअत और इस्तेक़लाल दो पहिलये हों, हक़परस्ती और अख़लाक़ जिसका बल्लम व परचम हो। (5)

जिसमें कूवते क़ल्बी, बसीरतो इमतियाज़, नफ़्सकुशी, दूसरों की भलाई व बहबूदी, ये चार घोड़े हों, और जो माफ़ी, करम, मुसावात की तिलड़ी रस्सी से जुते हुऐ हों। (6)

इबादत कि जिसका दाना कोचवान हो, परहेज़गारी ढाल और सब्र तलवार हो। (7)

ज़कात का तबर, सही व सालिम अक़्ल का तेज़ भाला, और हक़ शिनासी की सख़्त कमान हो। (8)

पाक-साफ़ व साकिन दिल तरकश हो, जो ज़ोहदो-रियाज़त के कसीर तीरों से भरा हो। (9)

खुदा शिनास आरिफ़ों की ख़िदमत का न भिदने वाला ज़िरह-बक्तर हो इसके बराबर फ़तेह की दूसरी तदबीर नहीं है। (10)

ऐ दोस्त! ऐसा दीनो ईमान भरा पूरा रथ जिसके पास है, उसे जीतने वाला कहीं भी नहीं है। (11)

ऐ सब्र व तसल्लत से पुर और दानिशमन्द दोस्त! सुनो, जिसके पास ऐसा मज़बूत रथ है, वह बहादुर दुनिया के फतेह न हो सकने वाले अज़ीम दुश्मन को भी जीत सकता है। (12)

हुसैनी धर्मास्त्र और हुसैनी धर्मरथ

जिस तरह अपने अजेय धर्मरथ और अचूक असलहाजात का बयान करके राम ने शरण में आये हुए दुश्मन के भाई विभिषण को लंका के मैदाने जंग में तसल्ली दी थी, उसी तरह ग़ालिबन हज़रत इमाम हुसैन ने भी पापी यज़ीद के लश्कर को तर्क करके धर्मकाय हुसैन की पनाह में आये हुए हुर को अपने दीनो ईमान के असलहाज़ात का बयान करके तसल्ली दी होगी। राम और हुसैन के जंग में सिर्फ़ फ़र्क इतना है कि राम ने रावण को मारकर फ़तेह हासिल की और हुसैन ने कर्बला के मैदान में खुद शहीद होकर यज़ीद और यज़ीदियत पर दायमी फ़तेह हासिल की।
शायर ने ठीक कहा है-

क़त्ले हुसैन अस्ल में मर्गे यज़ीद है।
इस्लाम ज़िन्दा हो गया बस कर्बला के बाद।।

इस्लाम का ध्येय विश्व शांति है

इस शेर का मतलब समझने में शायद गलतफ़हमी है। कुछ लोग इसका मतलब बताते हैं कि इस्लाम ख़ूँरेजी और क़तालो जिदाल के बाद फैलता है, लेकिन मैं ऐसा नहीं समझता। मेरा ख़्याल है कि 'इस्लाम' का अर्थ है 'सलामती'। सच्चा मुसलमान वही है जो तमाम कायनात की सलामती की कोशिश करता है। दूसरे अल्फ़ाज़ में इस्लाम दुनिया में अम्नो अमान यानी 'विश्व-शांति' का प्रचार करने वाला मज़हब है। 'पयम्बरे इस्लाम' का अर्थ मेरी समझ में 'विश्व-शांति का प्रसारक ईश्वरीय संदेश-वाहक' समझना दुरुस्त होगा।

इस रौशनी में मैं कहता हूँ कि दुनिया की सलामती चाहने वाले मुसलमान जब दुनिया की जाहो हशमत चाहने वाले नफ़्स परस्त 'यज़ीदियों' के ज़ुल्मो-तशद्दुद से वाक़याते कर्बला की तरह शहीद किये जाते हैं, तब इस्लाम ज़िन्दा हो गया यानी इस्लाम की नेकी की तरफ़ तमाम दुनिया की आँखें खिंच जाती हैं और दुनिया की नज़रों में इस्लाम चमक उठता है, दुनिया इस्लाम की मोतक़िद हो जाती है। मेरी समझ में यही सही मफ़हूम है इस मिसरे का कि-

"इस्लाम ज़िन्दा हो गया बस कर्बला के बाद।"